"वर्तमान समय में गुरु तेगबहादुर सिंह की शिक्षाओं की प्रासंगिकता"

"आज चुलो बलिदानी पगड़ी की बाते बतलाती हूँ
सिख धर्म के बलिदान की सारी कथा बताती हूँ
गुरु तेग बहादुर के जीवन का परहम जग में लहराती हूँ"

पूरी दुनिया अगर जीवन को समझना चाहे तो गुरुओं के जीवन को देखकर आसानी से समझ सकती है उनके जीवन में त्याग भी था और ज्ञान भी, प्रकाश भी था और आध्यात्मिक ऊँचाई थी। भारत अनेक अनेक देशो की तरह विशेष प्रकार की ऐतिहासिक और राजनीतिक परिस्थितियों से नहीं जन्मा अपितु यह एक नैसर्गिक, सांस्कृतिक - भौगोलिक इकाई है। भारत में समय-समय ऐसी विभूतियों ने जन्म लिया है जिनके वचनो और जीवन कर्मो के माध्यम से हमारे समाज को मानवता व श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का ज्ञान हुआ है। ऐसी ही एक महान विभूति जोकि कोहिनूर की भाँति चमकते हैं वह गुरु तेगबहादुर जी है, जिनकी शिक्षाएं आज के समय में भी समाज के लिए प्रासंगिक है।

सिख धर्म के नौवें धर्म गुरु तेगबहादर का जन्म बैशाख पंचमी सवंत 1621 को अमृतसर मे गुरु हरगोविंद साहिब जी के घर हुआ। बाल्यावस्था से ही वे संत स्वरूप, गहन विचारवान, उदार, चिल, बहादुर, निर्भीक स्वभाव के थे। मात्र 14 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ मुगलों के हमलो के खिलाफ हुए युद्ध में उन्होंने अपनी वीरता का परिचय दिया। इस वीरता से प्रभावित होकर उनके पिता ने उनका नाम तेग बहादुर यानी तलवार के धनी रख दिया। भारत के वीर सपूत सिक्खों के नौवें गुरु तेग बहादुर का जब आगमन

हुआ उस समय औरंगज़ेब जोकि एक मुगल शासक था उसका शासन बड़ा कट्टर तथा संकीर्ण विचारों का था। लोग उसके अत्याचारों से तंग आ चुके थे।

ऐसे समय में जाति को, देश को व धर्म को बचाने के लिए गुरु तेगबहादुर जी ने अपने प्रणों का बलिदान दिया।

"कश्मीरी बोले परेशान है, गुरुजी दहशतगर्दी से मुस्लिम सबको बना रहा है औरंगज़ेब नामर्दी से सोचा गुरु ने और कहा भारी कीमत चुकानी है भारत देश माँग रहा इस समय बड़ी कुर्बानी है।"

वर्तमान समय के परिवेश को देखते हुए उनकी शिक्षाओं की प्रासंगिकता महसूस की जाती है। आज आवश्यक है कि हर व्यक्ति स्वहित को त्यागकर राष्ट्रहित को बढ़ावा दे जिस प्रकार गुरु तेगबहादर जी ने हँसते हँसते अपनी कुर्बानी दूसरो के हित व देश के नाम कर दी थी। उन्होंने जीवन का प्रथम दर्शन धर्म का मार्ग सत्य और विजय का मार्ग बताया है शांति, क्षमा, सहनशीलता के गुणो वाले गुरु तेग बहादुर जीने लोगो को प्रेम, एकता व भाई चारे का संदेश दिया जोकि वर्तमान समय में लगभग विलुप्त होता हुआ नज़र आ रहा है। इसी क्रम से गुरु ने राष्ट्र सेवा के साथ जीव सेवा का मार्ग दिखाया और समानता और त्याग का मंत्र दिया जिसका पालन करना और जन-जन तक पहुचाना सभी का कर्तव्य है। आज के भौतिकवादी युग में जहां कर्मकांड और पाखंड, उपभोक्तावाद और स्वार्थ बुरी तरह हावी और हम वर्तमान कोरोना काल में भी इस अमानवता को देख सकते हैं। अतः वर्तमान

संदर्भ में गुरु तेग बहादुर की शहादत और शिक्षाओं की प्रासंगिकता है।

"आज गुरु तेगबहादुर की शिक्षा महसूस की जाती है क्योंकि आज पाखंड, उपभोक्तावाद बुरी तरह से हावी है प्रेम भाव फैलाने खातिर उनकी शिक्षा जरूरी है।"

* नाम - कोजल राठौड़
* कक्षा - बारहवीं
* सदन - हरित
* अनु.क्रमांक - 1202
* विद्यालय का नाम - केन्द्रीय विद्यालय वायु सैना, स्थल समाणा

गुरु तेग बहादुर

गुरु तेज बहादुर जी का जन्म पंजाब के अमृतसर नगर मे हुआ था। वह गुरु हरगोविन्द सिंह के पांचवे पुत्र थे। उनकी वीरता से प्रभावित होकर उनके पिता ने उनका नाम त्यागमल से तेज बहादुर कर दिया। धैर्य, वैराग्य और त्याग की मूर्ति गुरु तेज बहादुर जी ने एकांत मे लगातार बीस वर्ष तक 'बाबा बकाला' नामक स्थान पर साधना की। उनका जीवन समस्त मानवीय सांस्कृतिक विरासत के खातिर बलिदान था। तन की कुर्बानी दे कर जबरन धर्म प्रवर्तित करने वाले बादशाह औरँगजेब को रोकने का साहस किया और भारत को एक और इसलामिक देश बनने से रोका जब की तेजी से हिन्दु धर्म समाप्त हो रहा था, इतिहास को बच्चों मे पढ़ाए जाने का सहस आज की सरकारें नही कर पा रही हैं, सच्चाई लिखने से उन्हे डरे सो डरे, गुरु साहिब महान संत, धर्म एवं मानवता के रक्षक, निर्भीक आचरण, धार्मिक अडिगता एवं नैतिक उदारता के उत्कृष्ट उदाहरण है। धर्म उनके लिए सांस्कृतिक मूल्यों और जीवन विधान का नाम था। उनके अमूल्य विचार आज भी हम सभी के लिए बहुत प्रेरणादायी है। उनके अनुसार हर एक जीवित प्राणी के प्रति दया रखो, घृणा से विनाश होता है। एक सज्जन व्यक्ति वह है. जो अनजानों में किसी कि भावनाओं को ठेस ना पहुँचाए। अगर हम इनकी बातो के अनुसार अपना जीवन जिए तो धरती स्वर्ग बन जाएगी।

विद्यालय:- केन्द्रीय विद्यालय अहमदाबाद छावनी
नाम:- सिमरन
कक्षा :- 12- स

गुरु तेग बहादुर जी

"धरम हेत साका जिनी कीया
सीस दिया पर सिरड न दीया"

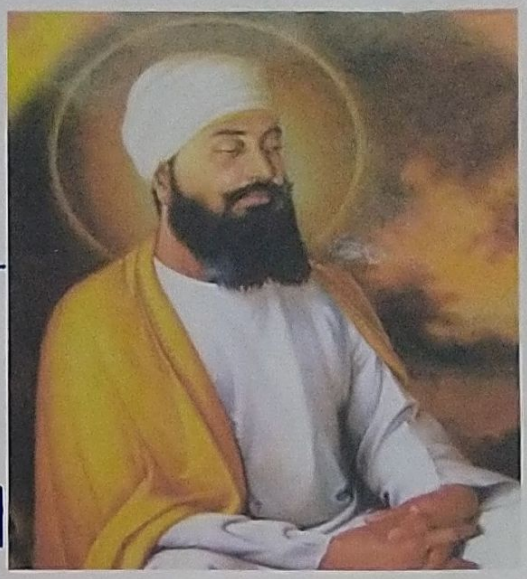

इस महावाक्य को सार्थक करने वाले थे - सिक्खों के नवें गुरु "गुरु तेग बहादुर जी"।

उन्होंने पहले गुरु "गुरुनानक" द्वारा सिखाए गए मार्ग का अनुसरण किया। उनके द्वारा रचित 115 श्लोक गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं।

अमृतसर की पवित्र भूमि पर जन्मी ऐसी पुण्य आत्मा, शांति के पुंज, त्याग और वैराग्य की मूर्ति, जिन्होंने मानवता के कल्याण और धर्म की रक्षा के लिए बलिदान दिया।

वह एक बहादुर युवक के रूप में बड़े हुए और मुगलों के खिलाफ लड़ाई में काफी साहस दिखाया।

उनके पिता ने उनकी बहादुरी के लिए उन्हें "गुरु तेग बहादुर जी" की उपाधि दी, जिसका अर्थ है "तलवार के पराक्रमी"।

उन्होंने खुद तो कुर्बानी दी ही, और देश-दुनिया के लिए उनका पूरा परिवार भी कुर्बान हो गया है। व्यक्ति के लिए अपने और अपने परिवार के कल्याण के लिए पीड़ित होना आम बात है, लेकिन जब कोई निस्वार्थ भाव से दूसरों के कल्याण के लिए बलिदान देता है, तो यह एक असाधारण बात है। हिंदुत्व की रक्षा के लिए उन्होंने हंसते हुए सिर कटा लिया। उन्होंने मुगलों के सामने सिर नहीं झुकाया और उनके मुस्लिम धर्म को स्वीकार नहीं किया।

अपनी बात पर अडिग रहे। धन धन है ऐसी महान आत्मा है।
आप समझ ही गए होंगे कि हम किसकी बात कर रहे हैं।
हम बात कर रहे हैं "हिंद की चादर" और सिखों के नवें गुरु "गुरु तेग बहादुर जी" की।
गुरु तेग बहादुर जी का जन्म 1 अप्रैल 1621 को छठे सिख गुरु हरगोबिंद साहिब जी और माता नानकी जी के घर हुआ था। अमृतसर में वह स्थान अब गुरुद्वारा के नाम से जाना जाता है। गुरु तेग बहादुर जी के चार भाई थे:- बाबा गुरु दित्ता जी, बाबा सूरजमल जी, बाबा अटल राय जी, बाबा अनी राय जी और बहन बीबी वीरो जी। उनके बचपन का नाम "त्यागमल" था। वह बहुत होनहार, शांत स्वभाव और धार्मिक थे। उनकी उम्र 5 साल होते ही, उन्होंने भाई गुरुदासजी और बाबा बुड्ढ जी से शास्त्र सीखे। इसके साथ ही उन्होंने घुड़सवारी और हथियार चलाना भी सिखा। वह तलवार चलाने में भी कुशल थे, वह अक्सर अपने पिता के साथ शिकार करने जाया करते थे।
14 साल की उम्र में अपने पिता के नेतृत्व में उन्होंने मुगलों के खिलाफ युद्ध लड़ा और अपनी तलवार का जौहर दिखाकर पांडे खां पर विजय प्राप्त की। उन्होंने डरे सहमे गाँव के लोगों को मुगलों के अत्याचार से मुक्त किया। युद्ध में उनके कौशल को देखकर उनके पिता ने उनका नाम "त्यागमल" से बदलकर "गुरु तेग बहादुर जी" कर दिया। उनका विवाह 14 सितंबर 1632 को करतारपुर निवासी की बेटी, माता गुजरी जी से हुआ था।
तेग बहादुर जी ने मानवता और हिंदू धर्म की रक्षा के लिए अपने जीवन और अपने भाइयों का बलिदान दिया था।

हम ऐसे महान व्यक्ति को नमन करते हैं और उनके दिखाए मार्ग पर चलने की पूरी कोशिश करेंगे और हमें गर्व है कि हमारे पूर्वजों ने धर्म और मानवता की रक्षा के लिए इतना बड़ा बलिदान दिया था।

→ धन्यवाद ←

नाम - हनी
कक्षा - ~~X~~ B
अनुक्रमांक - 14

वर्तमान समय में गुरु तेग बहादुर के विचारों की प्रासंगिकता

गुरू तेग बहादुर जी का जन्म पंजाब के अमृतसर नगर में हुआ था। ये गुरू हरगोविन्द जी के पाँचवें पुत्र थे। आठवें गुरु इनके पिता 'हरिकृष्ण राय' जी की अकाल मृत्यु हो जाने के कारण जनमत द्वारा ये नवम गुरु बनाए गए। इन्होंने आनन्दपुर साहिब का निर्माण करवाया और ये वहीं रहने लगे। उनका बचपन का नाम त्यागमल था। मात्र 14 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ मुगलों के हमले के खिलाफ़ हुए युद्ध में उन्होंने वीरता का परिचय दिया। उनकी वीरता से प्रभावित होकर उनके पिता ने उनका नाम त्यागमल से तेग बहादुर (तलवार के धनी) रख दिया। युद्धस्थल में भीषण रक्तपात से गुरू तेगबाहादुर जी के वैरागी मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उनका मन आध्यात्मिक चिंतन की ओर हुआ। धैर्य, वैरागी और त्याग की मूर्ति गुरू तेगबाहादर जी ने एकांत में लगातार 20 वर्ष तक (बाबा बकाले नामक स्थान पर साधना की। आठवें गुरु हरकिशन जी ने अपने उत्तराधिकारी का नाम के लिए 'बाबा बकाले' का निर्देश दिया। गुरू जी ने धर्म के प्रसार के लिए कई स्थानों का भ्रमण किया।

आनंदपुर साहब से कीरतपुर, रोपण, सैफाबाद होते हुए वे खिआला (खदल) पहुँचे। यहाँ उपदेश देते हुए दमदमा साहब से होते हुए कुरूक्षेत्र पहुँचे। कुरूक्षेत्र से यमुना के किनारे होते हुए कड़ामानकपुर पहुँचे और यहीं पर उन्होंने साधु भाई मलूकदास का उद्धार किया। इसके बाद गुरू तेग बहादुर जी प्रयाग, बनारस, पटना, असम आदि क्षेत्रों में गए जहाँ उन्होंने आध्यात्मिक, समाजिक, आर्थिक, उन्नथन के लिए रचनात्मक कार्य किए। आध्यात्मिकता, धर्म का ज्ञान बाँटा। रूढ़ियाँ अधविश्वासों की आलोचना कर नये आदर्श स्थापित किए। उन्होंने परोपकार के लिए कुएँ खुदवाना, धर्मशालाएँ बनवाना आदि कार्य भी किए। इन्हीं यात्राओं में 1666 में गुरूजी के यहाँ पटना साहब में पुत्र का जन्म हुआ। जो दसवें गुरू - गुरू गोविंद सिंह बने।

शहीदी दिवस

औरंगज़ेब के शासन काल की बात है। औरंगज़ेब के दरबार में एक विद्वान पंडित आकार रोज़ गीता के श्लोक पढ़ता और उसका अर्थ सुनाता था, वह पर वह पंडित गीता में से कुछ श्लोक छोड़ दिया करता था। एक दिन पंड़ित बीमार हो गया और औरंगज़ेब को गीता सुनाने के लिए अपने बेटे को भेज दिया परन्तु उसे बताना भूल गया कि उसे किन-किन श्लोकों का अर्थ राजा के सामने नहीं करना था। पंडित के बेटे ने जाकर औरंगज़ेब को पूरी गीता का अर्थ सना दिया। गीता का पूरा अर्थ सुनकर औरंगज़ेब को यह ज्ञान हो गया कि प्रत्येक धर्म अपने आप में महान हैं किन्तु औरंगज़ेब की हठ धर्मिता थी कि वह अपने धर्म के अतिरिक्त किसी दूसरे धर्म की प्रशंसा सहन नहीं थी।

औरंगज़ेब ने सबको इस्लाम धर्म अपनाने का आदेश दे दिया और संबंधित अधिकारी को यह कार्य सौंप दिया। औरंगज़ेब ने कहा - 'सबसे कह दो या तो इस्लाम धर्म कबूल करें या मौत को गले लगा लें। इस प्रकार की जबर्दस्ती शुरू हो जाने से अन्य धर्म के लोगों का जीवन कठिन हो गया।

जुल्म से त्रस्त कश्मीर के पंडित गुरु तेगबाहादुर के पास आए और उन्हें बताया कि किस प्रकार इस्लाम को स्वीकार करके अत्याचार किया जा रहा है। कृपया आप हमारे धर्म को बचाइए। गुरु तेगबाहादुर जब लोगों की व्यथा सुन रहे थे, उनके 9 वर्षीय पुत्र बाला प्रीतम (गुरु गोविंद सिंह) वहाँ आए और उन्होंने पिताजी से पूछा -
"पिताजी, ये सब इतने उदास क्यों हैं? आप क्या सोच रहे हो"

गुरु तेगबाहादुर ने कश्मीरी पंडितों की सारी समस्याएँ बाला प्रीतम को बताई तो उन्होंने पूछा - "इसका हल कैसे होगा?"

गुरु साहिब ने कहा - 'इसके लिए बलिदान देना होगा'

बाला प्रीतम ने कहा - 'आपसे महान पुरूष कोई नहीं है। बलिदान देकर आप इन सबके धर्म को बचाइए"।

उस बच्चे की बात सुनकर वहाँ उपस्थित लोगों ने पूछा - 'यदि आपके पिता बलिदान देंगे तो आप यतीम हो जाएँगे। आपकी माँ विधवा हो जाएगी।'

बाला प्रीतम ने उत्तर दिया - 'यदि मेरे अकेले के यतीम होने से लाखों बच्चे यतीम होने से बच सकते हैं या अकेले मेरी माता के विधवा होने से लाखों माताएँ विधवा होने से बच सकती हैं तो मुझे यह स्वीकार है।'

तत्पश्चात गुरु तेगबाहादुर जी नें पंडितों से कहा कि आप जाकर औरंगज़ेब से कह दो कि यदि गुरु तेगबाहादुर ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया तो उनके बाद हम भी इस्लाम धर्म ग्रहण कर लेंगें और यदि आप गुरु तेगबाहादुर जी से इस्लाम धर्म धारण नहीं करवा पाए तो हम भी इस्लाम धर्म धारण नहीं करेंगे।'

औरंगज़ेब ने यह स्वीकार कर लिया। गुरु तेग बाहादुर दिल्ली में औरंगज़ेब के दरबार में स्वयं गए। औरंगज़ेब ने उन्हें बहुत से लालच दिए, पर गुरु तेगबाहादुर जी नहीं माने तो उन पर जुल्म किए गए, उन्हें कैद कर लिया गया, दो शिष्यों को मारकर गुरु तेगबाहादुर जी को डराने की कोशिश की गयी, पर वे नहीं माने। तो उन्होने औरंगज़ेब से कहा- 'यदि तुम जबर्दस्ती लोगों से इस्लाम धर्म ग्रहण करवाओगे तो तुम सच्चे मुसलमान नहीं हो क्योंकि इस्लाम धर्म यह शिक्षा नहीं देता कि किसी पर जुल्म करके मुस्लिम बनाया जाए।'

गुरुद्वारा शीश गंज साहिब- औरंगज़ेब यह सुनकर आगबबूला हो गया। उसने दिल्ली के चाँदनी चौक पर गुरु तेगबाहादुर जी का शीश काटने का हुक्म जारी कर दिया और गुरु जी ने हँसते-हँसते बलिदान दे दिया। गुरु तेगबाहादुर जी की याद में उनके 'शहीदी स्थल' पर गुरुद्वारा बना है, जिसका नाम गुरुद्वारा 'शीश गंज साहिब' है।

नाम - आदित्य मीणा
कक्षा - दसवीं 'ब'
विद्यालय - के. वि. क्र.03, वायुसेना स्थल-2
जामनगर
मोबाइल नं. - 9928534051
ई. Mail :- meenaaditya2006@gmail.com

गुरु तेग बहादुर के उपदेशों की समकालीन प्रासंगिकता

पूरी दुनिया अगर जीवन को समझना चाहे तो गुरुओं के जीवन को देखकर आसानी से समझ सकती है। उनके जीवन में त्याग भी था और ज्ञान भी, प्रकाश भी था और आध्यात्मिक ऊँचाई भी। भारत अन्य अनेक देशों की तरह विशेष प्रकार की ऐतिहासिक और राजनीतिक परिस्थियों से नहीं जन्मा अपितु यह एक नैसर्गिक, सांस्कृतिक - भौगोलिक इकाई है। भारत में समय-समय ऐसी विभूतियों ने जन्म लिया जिनके वचनों और कर्मों के माध्यम से हमारे समाज को मानवता व श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का ज्ञान हुआ है। ऐसी ही एक महान विभूति जो कि कोहिनूर की भाँति चमकते हैं वह गुरु तेग बहादुर जी हैं।

सिख धर्म के नौवें धर्म गुरु तेग ~~बहा~~ बहादुर का जन्म बैशाख पंचमी संवत 1621 को अमृतसर में गुरु हरगोबिंद ~~साहब~~ साहिब जी के घर हुआ। बाल्यावस्था से ही वे संत स्वरूप, गहन विचारवान, उदार, चित्त, बहादुर, निर्भीक स्वभाव के थे। मात्र 14 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ मुगलों के हमले के खिलाफ हुए युद्ध में उन्होंने अपनी वीरता का परिचय दिया। इस वीरता से प्रभावित होकर उनके पिता ने उनका नाम तेग बहादुर यानी तलवार के धनी रख दिया। भारत के वीर सपूत सिक्खों के नौवें गुरु तेग बहादुर का आगमन हुआ उस समय औरंगजेब जो कि एक मुगल शासक था उसका शासन बड़ा कट्टर तथा संकीर्ण विचारों का था। लोग उसके अत्याचारों से तंग आ चुके थे। ऐसे समय में जाति की, देश की व धर्म की बचाने के लिए गुरु तेगबहादुर जी ने अपनो प्राणों का बलिदान दिया।

" कश्मीरी बोले पेरेशान हैं गुरूजी दहशतगर्दी से
मुस्लिम सबको बना रहा है औरंगजेब नामर्दी से
सोच गुरु ने और कहा भारी कीमत चुकानी है
भारत देश माँग रहा इस समय बड़ी कुर्बानी है।"

वर्तमान समय के परिवेश को देखते हुए उनकी शिक्षाओं की प्रासंगिकता महसूस की जाती है। आज आवश्यक है कि हर व्यक्ति स्वहित को त्यागकर राष्ट्रहित को बढ़ावा दे जिस प्रकार गुरु

तेगबहादुर जी ने हँसते-हँसते अपनी कुर्बानी दूसरों के हित व देश के नाम कर दी थी। उन्होंने जीवन का प्रथम दर्शन धर्म का मार्ग सत्य और विजय का मार्ग बताया है। शांति, क्षमा, सहनशीलता के गुणों वाले गुरू तेग बहादुर जी ने लोगों को प्रेम, एकता व भाईचारे का संदेश दिया जो कि वर्तमान समय में लगभग विलुप्त होता हुआ नजर आ रहा है। इसी क्रम में गुरू ने राष्ट्र सेवा के साथ जीव सेवा का मार्ग दिखाया और समानता और समरसता और त्याग का मंत्र दिया जिसका पालन करना और जन-जन तक पहुँचाना सभी का कर्तव्य है। आज की भौतिकवादी युग में जहाँ कर्मकांड और पाखंड, उपभोक्तावाद और स्वार्थ बुरी तरह हावी है। अतः वर्तमान संदर्भ में गुरू तेग बहादुर की शहादत और शिक्षाओं की प्रासंगिकता है।

"आज गुरू तेग बहादुर की शिक्षा महसूस की जाती है क्योंकि आज पाखंड, उपभोक्तावाद बुरी तरह से हावी है प्रेम भाव फैलाने खातिर उनकी शिक्षा जरूरी है।"

नाम: संष कुमार
कक्षा: 10 'स'
मोबाइल नं: 9724043038
E-mail ID: sanshkumar1705@gmail.com